No. of Printed Pages : 3

एम.एच.डी.-14

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2013

एम.एच.डी.-14 : हिन्दी उपन्यास-1 (प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : ***पहला*** *और* ***छठा*** *प्रश्न* ***अनिवार्य*** *है। शेष में से* ***किन्हीं दो*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

1. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। **2x10=20**

(a) यह मानसिक गुलामी उस भौतिक गुलामी से कहीं गई गुजरी है। आप उपनिषदों को अंग्रेजी में पढ़ते हैं, गीता को जर्मन में । अर्जुन को अर्जुना, कृष्ण को कृशना कहकर अपने स्वभाषा -ज्ञान का परिचय देते हैं । आपने इसी मानसिक दासत्व के कारण उस क्षेत्र में अपनी पराजय स्वीकार कर ली, जहाँ हम हमारे पूर्वजों की प्रतिभा और प्रचंडता से चिर-काल तक अपनी विजय-प्रताका फहरा सकते थे।

(b) अब मैं अपना स्वामी हूँ , मेरी आत्मा स्वच्छन्द है। अब मुझे किसी के सामने घुटने टेकने की जरूरत नहीं । इस दलाली की बदौलत मुझे अपनी आत्मा पर कितने अन्याय करने पडते, ईस का मुझे थोड़ा अनुभव हो चुका है। मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ कि उसने मुझे इस आत्म-पतन से बचा लिया।

(c) तुम खेल में निपुण हो, हम अनाड़ी हैं। बस इतना ही फरक है। तालियाँ क्यों बजाते हो, यह जीतने वालों का धरम नहीं ? तुम्हारा धरम तो है हमारी पीठ ठोकना । हम हारे, तो क्या, मैदान से भागे तो नहीं, रोये तो नहीं, धाँधली तो नहीं की। फिर खेलेंगे, ज़रा दम ले लेने दो, हार-हार कर तुम्हीं से खेलना सीखेंगे और एक-न-एक हमारी जीत होगी, जरूर होगी।

(d) मानव-जीवन की सबसे महान् घटना कितनी शांती के साथ घटित हो जाती है। वह विश्व का एक महान् अंग,वह महत्वाकांक्षाओं का प्रचंड सागर, वह उद्योग का अनंत भांडार, वह प्रेम और द्वेष, सुख और दु:ख का लीला-क्षेत्र, वह बुद्धि और बल की रंगभूमि न जाने कब और कहाँ लीन हो जाती है, किसी को खबर नहीं होती।

2. ''प्रेमचन्द की कहानी-कला के विकास के विभिन्न चरणों की समीक्षा कीजिए। 10

3. 'प्रेमाश्रम' में विद्या और गायत्री के चरित्रों की परस्पर तुलना कीजिए। 10

4. सूरदास और गांधीजी के विचारों की समानताएँ एवं असमानताएँ स्पष्ट कीजिए। 10

5. 'गबन' में राष्ट्रीय अन्दोलन का चित्रण किस प्रकार हुआ है? 10

6. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिए : 5x2=10

(a) प्रेमचन्द की कहानियों की विशेषताएँ।

(b) 'सेवासदन' में सुमन का चरित्र।

(c) 'प्रेमाश्रम' में ज्ञानशंकर के जीवन की त्रासदी ।

(d) 'रंगभूमि' में प्रेमचन्द का आदर्शवाद।